राष्ट्रभाषा विद्यालय
बनारस
22-12-47

प्रियवर,

एक अरसा फिर हुआ, हमने पत्र से सम्वाद नहीं पाया। आप के पारिवारिक जीवन की सदा चिन्ता रही जबसे यहां के लोगों से आपकी पत्नी का वियोग सुना। हम सान्त्वना क्या दें? यही कहते हैं कि जहां तक सम्भव है, दीर्घकाल तक विश्राम कीजिए। पत्र जल्द दीजिएगा। हम आप से मिलना भी चाहते हैं अगर एक सुअवसर ही से मिलना सम्भव है।

हम तुलसीदास जी की रामायण का आधुनिक हिन्दी में रूपान्तर कर रहे हैं। दो पुस्तिकाएं इसी की निकल रही हैं एक यहां से, विनय खण्ड: शुरू से पार्वती विवाह हो जाने तक; दूसरी साहित्यकार संसद से फुलवाड़ी-खण्ड। तुलसी की छन्द-रचना-पद्धति यथा साध्य रखी गयी है। देखना हो तो बड़े दिन में आइए। नहीं तो किताबें यथा समय भेजी जाएंगी। विनय खण्ड छप रहा है दो फार्म कम्पोज हो चुके हैं।

पुनः - अगर आयें तो सूचना दें और अपनी छपती बड़ी पुस्तक के फार्म लेते आवें।

इस बात के बाद हम ~~आपके~~ ~~आपके~~ आपने पूरी होने के